स्पन्दन

वार्षिक राजभाषा पत्रिका

अंक 3, सितम्बर 2017

SCHOOL OF PLANNING AND ARCHITECTURE BHOPAL

स्थपतिः स्थापनार्हः स्यात् सर्वशास्त्रविशारदः

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान)

संस्थान गान

"नागपृष्ठ समारूढं शूलहस्तं महाबलम्।
पाताल नायकं देवं वास्तुदेवं नम्याम्ह्यम्।।"

उठो सुनो प्राची से उगते, सूरज की आवाज।
अपना देश बनेगा सारी दुनिया का सरताज।।

श्रद्धा अपरम्पार कि पत्थर में भी प्रीति जगाई।
ताजमहल पर गर्व हमें है, जग भी करे बड़ाई।।
उसी प्रेरणा से रच दें, हम फिर से नया समाज।
स्वागत करने को नवयुग का, नया सजाएं साज़।।

मलिन हो गई धरा आज फिर, उसको पुनः सजाएं।
हरित शिल्प से चलो सृजन का, नारा हम दोहराएं।।
सोये आदर्शों को आओ, सब मिल पुनः जगाएं।
नूतन सृजन हो शिव सृजन, दुनिया में पहुँचाएं।।

उठो सुनो प्राची से उगते, सूरज की आवाज।
एस.पी.ए. के छात्र करेंगे, नवयुग का आगाज़।।

संस्थान गीत

ढूंढ रहा था, इक नया उजाला,
फिर मिला तू, इस नयी राह में।
तू ही जिन्दगी, तू ही मंजिल,
तू ही हर खुशी, इस दास्तान में।

ये जमीं, ये आसमां,
और सितारे भी हैं अपने साथ।
ये अंधेरा भी टल जायेगा,
कल सवेरा नया लायेगा।।

हर खुशियों में, हर मुश्किल में,
हर लबों पे बस एक ही पुकार,
जी उठे... एसपीए, भोपाल।

तेरी दुआ से, कुछ बन जाऊंगा,
तेरे नाम को, मिटने ना दूंगा।
जहां जहां पर, मेरे कदम पड़ेंगे,
वहाँ तेरा फिर, निशां दिखेगा।

ये जमीं, ये आसमां,
और सितारे भी हैं अपने साथ।
ये अंधेरा भी टल जायेगा,
कल सवेरा नया लायेगा।

हर खुशियों में, हर मुश्किल में,
हर लबों पे बस एक ही पुकार,
जी उठे .... एसपीए, भोपाल।

निदेशक का संदेश ...

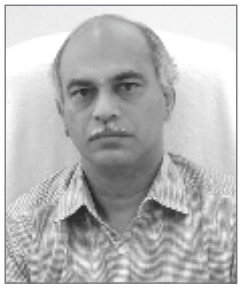

''आत्मविश्वास सफलता की कुंजी है'' आज के दौर में वैज्ञानिक, सांस्कृतिक और कलात्मक उपलब्धियाँ मनुष्य को आत्मविश्वास के कारण ही प्राप्त हो सकी हैं। आत्मविश्वास का जन्म मन में होता है। मनुष्य का मन समस्त इन्द्रियों का स्वामी और गतिविधियों का केन्द्र माना जाता है। वास्तव में कोई भी संघर्ष या लड़ाई मनुष्य अपने आत्मबल से ही जीत सकता है मनुष्य शरीर तो एक साधन मात्र है।

सफलता एवं उन्नति के शिखर पर केवल वही पहुँच सकता है जिसका मनोबल, आत्मविश्वास सुदृढ़ होगा। जब व्यक्ति सच्चाई के रास्तों पर चलता है तो उसे कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है किन्तु सफलता भी उसी व्यक्ति के कदम चूमती है जो सच्चाई और आत्मविश्वास के साथ अपने लक्ष्य की प्राप्ति का प्रयास करता है।

संस्थान की हिंदी पत्रिका ''स्पन्दन'' के तृतीय अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत सुखद अनुभूति हो रही है। पत्रिका के प्रथम एवं द्वितीय अंक पर पाठकों की उत्साहजनक प्रतिक्रिया के लिये सभी को धन्यवाद।

संविधान के अनुच्छेद 351 में निर्धारित किया गया है ''अष्टम् अनुसूची में वर्णित अन्य भारतीय भाषाओं के रूप शैली और पद बंधों को आत्मसात करते हुए हिंदी भाषा का विकास करना संघ सरकार का दायित्व है।''

मैं उम्मीद करता हूं संस्थान हिंदी पत्रिका ''स्पन्दन'' के माध्यम से हिंदी भाषा के विकास में सार्थक भूमिका निभाता रहेगा। पत्रिका के तृतीय अंक के प्रकाशन पर सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन

निदेशक – एक परिचय

प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन वर्तमान में योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के निदेशक हैं। वह इंस्टीट्यूट ऑफ टाउन प्लानर्स, इंडिया की प्रोफेशनल बॉडी की शैक्षणिक स्थायी समिति के अध्यक्ष तथा रीजनल साइंस एसोसिएशन, इंडिया के उपाध्यक्ष भी हैं। इससे पूर्व, वह योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, विजयवाड़ा के निदेशक एवं योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, दिल्ली में प्रोफेसर के पद पर भी कार्य कर चुके हैं।

शहरी और क्षेत्रीय योजना के क्षेत्र में डॉ. श्रीधरन को 33 वर्ष से अधिक का अनुभव है। उन्होंने अर्थशास्त्र, शहरी और क्षेत्रीय योजना, शहर एवं देश नियोजन (पोलैंड) और वित्तीय प्रबंधन में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की है एवं शहरी नियोजन के क्षेत्र में आर.एम.आई.टी., ऑस्ट्रेलिया से शोध उपाधि प्राप्त की है। उन्होंने शहरी प्रशासन और वित्त, पेरी–शहरी विकास, ग्रामीण विकास और स्थानिक डाटा इन्फ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में व्यापक रूप से प्रकाशन किया है।

डॉ. श्रीधरन ने कोलोन विश्वविद्यालय जर्मनी, फ्लोरेंस विश्वविद्यालय इटली, पेरिस विश्वविद्यालय, एम्स्टर्डम विश्वविद्यालय, ट्वेन्ट विश्वविद्यालय (आई.टी.सी.–एन्शेडे), नीदरलैंड, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इकोलॉजी (आई.ओ.ई.आर) ड्रेस्डन, जर्मनी में विज़िटिंग रिसर्चर के रूप में कार्य किया है। डॉ. श्रीधरन को विभिन्न अवसरों पर बहुत से भारतीय और विदेशी विश्वविद्यालयों द्वारा सम्मानित किया गया है। शहरी प्रशासन एवं वित्त, पेरी–शहरी विकास, रर्बन क्लस्टर योजना, कॉरिडोर विकास एवं शहरीकरण, शहरी बाजार भूमि, गरीबी एवं स्थिरता एवं स्थानिक डाटा इंफ्रास्ट्रक्चर विषयों पर उनकी विशेष रूचि है।

समितियाँः–

1. तकनीकी सदस्य, पंचायती राज मंत्रालय, भारत सरकार, समिति का कार्य ग्रामीण क्षेत्रों के लिये योजनाओं के दिशा निर्देश तैयार करना है।
2. तकनीकी सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, समिति का कार्य रर्बन मिशन संकुल के इंफ्रास्ट्रक्चर की बेंचमार्किंग करना है।
3. अध्यक्ष, शैक्षिक स्थायी समिति, इंस्टीटयूट ऑफ टाउन प्लानर्स, इंडिया, नई दिल्ली।
4. उपाध्यक्ष, रीज़नल साइंस एसोसिएशन ऑफ इंडिया।
5. अभिषद सदस्य, योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, विजयवाड़ा।

संस्थान की गतिविधियाँ

तृतीय दीक्षांत समारोह

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय (एस.पी.ए.), भोपाल का तृतीय दीक्षांत समारोह 15 अक्टूबर 2016 को आयोजित हुआ। दीक्षांत समारोह का आरम्भ संस्थान गान से हुआ। कार्यक्रम के शुभारम्भ की घोषणा संस्थान के निदेशक प्रो. चेतन वैद्य ने स्वागत ज्ञापन व प्रतिवेदन से की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विख्यात वास्तुकार व शिक्षाविद् प्रो. क्रिस्टोफर बेनिंगर ने दीक्षांत समारोह को संबोधित किया। एस.पी.ए. बोर्ड ऑफ गवर्नर के चेयरमैन प्रो. बिमल पटेल भी समारोह में उपथित थे। दीक्षांत समारोह में प्रथम बार पीएच. डी. की 2 उपाधि सहित, मास्टर ऑफ आर्किटेक्चर (अर्बन डिजाइन), मास्टर ऑफ आर्किटेक्चर (कन्जर्वेशन), मास्टर ऑफ आर्किटेक्चर (लेंड्स्केप) मास्टर ऑफ प्लानिंग (अर्बन रीजनल प्लानिंग), मास्टर ऑफ प्लानिंग (इनवायरमेंटल प्लानिंग) बैचलर ऑफ आर्किटेक्चर, बैचलर ऑफ प्लानिंग की कुल 162 उपाधि संस्थान द्वारा दी गई। दीक्षांत समारोह में सात छात्रों को प्रवीणता स्वर्ण पदक व एक छात्र मधुर कुकरेजा को चेयरपर्सन मेडल प्रदान किया गया।

सुगम्य भारत अभियान

सुगम्य भारत अभियान शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों की वैश्विक पहुंच को बढ़ावा देने हेतु एक राष्ट्रीय अभियान के रूप में आरंभ किया गया है, यह अभियान सभी के लिये समान प्रवेश उपलब्ध कराता है चाहे वह वृद्ध हों या शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्ति, इनके लिये समावेशी शहरों की स्थापना करना अभियान का उद्देश्य है। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि पेशेवर संबंधित

मुद्दों का सामाधान करने के लिये कौशल का विकास करें एवं सामाजिक रूप से जागरूक बनें। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए योजना एवं वास्तुकला विद्यालय ने दिनांक 09–12 दिसम्बर 2016 को संस्थान परिसर में एक कार्यशाला ''भविष्य के पेशेवरों के लिये सुगम्य प्रशिक्षण कार्यशाला'' का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय शहरों में वैश्विक पहुंच की चुनौतियों एवं अवसरों को समझना है। कार्यशाला में वास्तुकला, योजना, डिजाइन, इंजीनियरिंग एवं अन्य संबंधित विषयों के छात्र भी शामिल हुए एवं निर्माण पर्यावास, रिक्त स्थान, इमारतों, अवसंचना तथा इंटरफेस के प्रयोज्य पर क्षमता और

विकलांगता के प्रभाव एवं सार्वभौमिक पहुंच की जानकारी छात्रों को दी गई।

इंटीग्रल स्टूडियो

एस.पी.ए. भोपाल ने आई.टी.पी.आई. एवं भोपाल स्मार्ट सिटी डेवलपमेंट कार्पोरेशन लिमि. के सहायोग से 7 दिवसीय इंटीग्रल स्टूडियो दिनांक 19–25 जुलाई 2017 के मध्य आयोजित किया। यह 7 दिवसीय कार्यक्रम ''स्मार्ट सिटीः भोपाल में भविष्य की कल्पना'' विषय पर आयोजित

किया गया था। एस.पी.ए. भोपाल इस इंटीग्रल स्टूडियो में नॉलेज पार्टनर के रूप में था।

इस सात दिवसीय कार्यक्रम में एस.पी.ए. व मैनिट के 200 से अधिक छात्र शामिल थे। स्टूडियो स्मार्ट सिटी के प्लान में रिन्डेवलपमेंट के संबंध में अयोजित किया गया था। साथ ही रिन्डेवलपमेंट एरिया के रूप में चिन्हित किए गए साउथ टी.टी. नगर में बिल्डिंग की गुणवत्ता, लोकेशन, परिवहन सुविधाओं के मुद्दों पर सर्वेक्षण किया गया तथा उनसे जुड़ी परियोजनाओं पर छात्रों ने रिपोर्ट तैयार की। छात्रों ने न केवल उस क्षेत्र से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी एकत्रित की बल्कि वहां के रहवासियों से चर्चा की व फोटो डाक्यूमेंटेशन भी किया। सर्वे के बाद छात्रों ने बेहतर प्लानिंग कर सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए स्मार्ट सिटी प्लान के लिये मॉडल तैयार किये। स्टूडियो में स्टूडेंट को स्मार्ट सिटी कान्सेप्ट के मानवीय पहलुओं को समझाया गया। इस हेतु विशेषज्ञों के निर्देशन में साइट सर्वेक्षण, डाटा विश्लेषण, अध्ययन क्षेत्र का स्थानिक मूल्यांकन, कार्यों और गतिविधियों का मानचित्रिकरण व मॉडल स्टूडियो तैयार किये गए।

स्टूडियो के स्मार्ट सिटी रिन्डेवलपमेंट प्लान में छात्रों ने विभिन्न रचनात्मक मॉडल तैयार किये एवं इंटीग्रल स्टूडियो की जूरी द्वारा एस.पी.ए भोपाल के छात्रों को प्रथम पुरस्कार एवं मैनिट के छात्रों को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

जी.आई.ए.एन. (GIAN-3)

एस.पी.ए. भोपाल परिसर में शेफील्ड विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध प्रोफेसर हेलेन वूली के सहयोग से जी.आई.ए.एन. –3 कार्यशाला का आयोजन 8 से 12 दिसंबर 2016 के मध्य किया गया। कार्यक्रम का संचालन सोनल तिवारी (सहायक प्राध्यापक) द्वारा किया गया। जी.आई.ए.एन. (GIAN) कार्यशाला में ओपन स्पेस की परिभाषा, प्रकार,

लाभ, मूल्यांकन के लिए मानदंड व मूल्यांकन के प्रकार की जानकारी दी गई। बच्चों व वृद्धों के लिए डिजाइन, समावेशी ओपन स्पेस, शहरों में ओपन स्पेस के नेटवर्क का महत्व, आपदा के बाद पुनर्वास के संदर्भ में अभिकल्पन जैसे विषयों एवं चीन, जर्मनी, अमेरिका और ब्रिटेन की केस स्टडी को कार्यशाला में समाहित किया गया। प्रतिभागियों ने पाठ्यक्रम में भाग लेने पर संतोष व्यक्त किया। कार्यक्रम में सभी वरिष्ठ संकाय प्रोफेसर (अध्यक्ष, निदेशक, शैक्षणिक डीन, जी.आई.ए.एन. संस्थान समन्वयक, कोर्स कंडक्टर, प्रतिभागी और कार्यक्रम के स्वयं सेवक) उपस्थित थे।

जी.आई.ए.एन. (GIAN-4)

एस.पी.ए. भोपाल परिसर में ''आर्थिक विकास और औद्योगिक उन्नयनः उत्पादन की सीमाओं को समझना'' विषय पर जी.आई.ए.एन.(GIAN) पाठ्यक्रम 14–18 दिसंबर 2016 तक आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम को प्रो. मीनु तिवारी (पीएच.डी. एम.आई.टी.) नार्थ कैरोलिना यूनिवर्सिटी, अमेरिका द्वारा आयोजित किया गया।

कार्यशाला ''सिमबायोसिस''

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, (S.P.A.) भोपाल द्वारा आई.टी.पी.आई. के सहयोग से सिमबायोसिस (Symbiosis) कार्यशाला एवं प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 24–27 मार्च 2017 को संस्थान परिसर में किया गया। कार्यशाला एवं प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के सभी छात्रों ने पंजीयन कर सहभागिता ली। सिमबायोसिस 2017 की थीम रखी गई :

आचार्यात् पादमादते पादं शिष्यः स्वमेधया।

पादं सब्रह्मचारिभ्यः पादं कालक्रमेण च।।

कार्यक्रम में कोलकाता से लीवार्डडेस्ट के सदस्य श्री निलंजन मण्डल, आई.टी.पी.आई. सदस्य, एस.पी.ए. भोपाल के निदेशक, अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष एवं प्राध्यापकगण सम्मिलित हुए एवं इनके सहयोग से स्टूडियो कार्यक्रम, डिबेट, प्रश्नोत्तरी, पेंटिंग फोटोग्राफी, पोर्ट्रेट, ऑरिगैमी एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

हैण्ड्स ऑन वर्कशॉप

बी. आर्क. प्रथम वर्ष के छात्रों को भवन सामग्री एवं निर्माण की जानकारी देने हेतु एक प्रायोगिक कार्यशाला 11 से 18 नवम्बर 2016 को संस्थान परिसर में आयोजित की गई। सहायक प्राध्यापक, नयना आर. सिंह एवं प्रियंका सिंह उक्त कार्यशाला की समन्वयक थीं। कार्यशाला का उद्देश्य भवन निर्माण की तकनीक एवं प्रयोग होने वाली सामग्री (ईंट, स्टोन, सीमेंट, रेत और मोटार) की जानकारी देना था।

कार्यशाला ''जलवायु परिवर्तन अनुकूलता एवं स्मार्ट शहर''

इस कार्यक्रम में तीन कार्यशालाएँ मध्य प्रदेश के तीन स्मार्ट शहरों +भोपाल, इंदौर और जबलपुर में आयोजित की गईं जिसमें समावेशी और अनुरूप शहर के विकास के लिए उपर्युक्त सभी प्रमुख हितधारकों का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतिभागी उपस्थित थे। कार्यशाला में शहरी प्रबंधकों और चयनित शहरों के नगर इंजीनियरों को भविष्य के स्मार्ट शहरों की कल्पना करने और उसके अनुसार निर्णय लेने में मदद मिलेगी। कार्यशाला में शिक्षाविद, वैज्ञानिक, हितधारक और चयनित शहरों से संबंधित अनुसंधान में सम्मिलित व्यक्तियों की भागीदारी भविष्य में शहरों के विकास के लिये आवश्यक थी। कार्यशाला विभिन्न संगठनों से 30 प्रतिभागियों के लिये डिजाइन की गई थी।

कार्यशाला ''रेयर बुक्स कंजर्वेशन''

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, (S.P.A.) भोपाल द्वारा दिनांक 24–25 मार्च 2017 को ''पुस्तकालय में रेयर बुक्स का कंजर्वेशन'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन संस्थान परिसर में किया गया। कार्यक्रम में श्री इलियास अहमद, (सीनियर कंजर्वेटर, नेशनल रिसर्च लेबोरेटरी फॉर कंजर्वेशन ऑफ कल्चरल प्रॉपर्टी, लखनऊ) विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किये गए एवं विभिन्न संगठनों के पुस्तकालय विशेषज्ञ जैसे आई.आई.एस.ई.आर. आर.आई.ई., आई.जी.आर.एम.एस., निफ्ट, ए. एस.आई, सांची यूनिवर्सिटी, सम्राट अशोक टेक्नॉलाजी इंस्टीटयूट, आई.आई.टी. कानपुर, जीवाजी यूनिवर्सिटी, ग्वालियर एवं एसपीए भोपाल के एम. आर्क. (कंजर्वेशन) के छात्र भी इस कार्यशाला में उपस्थित हुए। कार्यशाला का प्रांरभ कार्यशाला समन्वयक श्री आशिष पाटिल द्वारा किया गया। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में पुस्तकालय सामग्री के परिरक्षण व उनके उपचारात्मक संरक्षण के बारे में अभिव्यक्ति दी। कार्यशाला में आमंत्रित विशेषज्ञ श्री इलियास अहमद ने प्रशिक्षण प्रारंभ करते हुए अभिलेखीय सामग्री का संरक्षण, पुस्तकों में आने वाली समस्या जैसे बाइंडिंग, पेज फटना, रंग बदलना, पुस्तकों का आकार परिवर्तन होना जैसी समस्याओं एवं उनके कारणों की जानकारी दी।

कत्थक : सुप्रसिद्ध कत्थक नृत्यांगना सितारा देवी के नाती विशाल कृष्ण ने दिनांक 01 सितम्बर 2016 को योजना एवं वास्तुकला विद्यालय परिसर में स्पिक मैके की ओर से आयोजित कार्यक्रम में विशेष नृत्य प्रस्तुति दी। विशाल ने छात्रों के साथ क्लासिकल डांस पर चर्चा की। भगवान श्रीराम की बाललीला पर केंद्रित गीत 'ठुमक चलत रामचंद्र बाजत पैंजनियां ... पर विशाल की प्रस्तुति ने आकर्षित किया। अगले क्रम में उन्होंने शिव के अलग–अलग रूपों को विभिन्न प्रकार की भाव भंगिमाओं के साथ प्रस्तुत किया। प्रस्तुति के दौरान विशाल ने स्टूडेंट्स से कत्थक में अपने रूझान और नानी सितारा देवी से मिली प्रेरणा के बारे में भी विस्तार से चर्चा की। इस मौके पर काफी संख्या में छात्र–छात्राएँ उपस्थित थे।

गणतंत्र दिवस

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी संस्थान में गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में संस्थान के संकायगण सदस्य, अधिकारीगण, कर्मचारीगण व छात्र–छात्राएँ सम्मिलित हुए। प्रो. अजय खरे, संकायाध्यक्ष (शैक्षणिक क्रियाकलाप) ने ध्वजारोहण किया व संस्थान के सुरक्षा गार्ड ने राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी। प्रो. अजय खरे ने सभा को संस्थान की आगामी कार्ययोजनाओं की जानकारी दी। अध्यक्ष, छात्र परिषद ने अपने उद्‌बोधन में वर्ष के दौरान छात्रों की उपलब्धियों के विषय में बताया। वर्ष के दौरान हुई क्रीड़ा प्रतियोगिता में छात्रों एवं कर्मचारियों को मेडल वितरित किये गए।

छाऊ नृत्य : भारतीय परम्पराओं के मूल्यों को समझने एवं आज के युवाओं को प्रेरित करने के उद्‌देश्य से 15 फरवरी 2017 को संस्थान परिसर में सांस्कृतिक कार्यक्रम स्पिक मैके का आयोजन किया गया। नृत्य का संचालन श्री सुसमय महतो 15 सदस्यों सहित कर रहे थे। कार्यक्रम में संकाय सदस्यों, छात्रों एवं स्टाफ को छाऊ डांस, छाऊ डांस मंडली द्वारा देखने का अवसर मिला। मंडली ने सुंदर वेशभूषा और अभिव्यक्तियों के साथ पूरे दर्शकगणों को रोमांचित कर दिया एवं बहुत शानदार एवं आकर्षक प्रदर्शन किया।

स्वतंत्रता दिवस

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के नवीन परिसर में स्वतंत्रता दिवस समारोह मनाया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

संस्थान में 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' दिनांक 26–31 अक्टूबर 2016 के मध्य मनाया गया। इस कार्यक्रम पर संस्थान ने सामान्य जागरूकता के लिए छात्रों की भागीदारी के साथ सुशासन के माध्यम से भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए बहुत सी गतिवधियाँ की। सतर्कता जागरूकता सप्ताह का प्रारंभ छात्रों, शिक्षकों, अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण द्वारा शपथ लेने के साथ किया गया। श्री आर. परशुराम, राज्य चुनाव आयुक्त म.प्र. एवं पूर्व मुख्य सचिव म.प्र. शासन को संस्थान के छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों को सतर्कता के विषय में उद्‌बोधन देने हेतु संस्थान द्वारा आमंत्रित किया गया। श्री परशुराम ने भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए भारत सरकार द्वारा उठाए गए विभिन्न पहलुओं के बारे में बताया और युवा वर्ग को सभी स्तर पर भ्रष्टाचार के उन्मूलन हेतु आगे आने के लिए अपील की।

वृक्षारोपण

संस्थान के बागवानी क्लब ने पौधारोपण अभियान 10–11 सितम्बर 2016 को संस्थान कार्य विभाग के सहयोग से आयोजित किया। उनके द्वारा 89 पेड़ परिसर में विभिन्न स्थानों पर रोपित किये गए। संस्थान के संकायसदस्य, कर्मचारीगण एवं छात्रों ने इस अवसर पर स्वच्छता शपथ ली। इसके बाद नागपुर से आमंत्रित श्री आरिफ खान ने ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर व्याख्यान दिये।

हिन्दी पखवाड़ा

संस्थान परिसर में 15 दिवसीय हिन्दी पखवाड़ा 1 से 15 सितम्बर 2016 के मध्य बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। संस्थान के राजभाषा विभाग के इस आयोजन में हिन्दी भाषा के ज्ञान के संवर्धन व व्यापक प्रचार – प्रसार हेतु छात्रों व छात्राओं, शिक्षकों, अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे ''निबंध लेखन, सुलेख लेखन, हिन्दी टंकण, अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद, प्रशासनिक/तकनीकी शब्दावली, कार्यालय टिप्पण/हिन्दी प्रारूपण, तात्कालिक बोल'' इत्यादि आयोजित की गई थीं व इसमें संस्थान के कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि कवि कथाकार ''श्री ध्रुव शुक्ल जी'', प्रो. अजय खरे (संकायाध्यक्ष, शैक्षणिक क्रियाकलाप), श्री राजेश मौज़ा (कुलसचिव) द्वारा संस्थान की हिन्दी पत्रिका ''स्पन्दन'' अंक – 2 का विमोचन किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि ''श्री ध्रुव शुक्ल जी'' प्रो. अजय खरे एवं श्री राजेश मौज़ा ने पुरस्कार प्रदान किए।

निबंध	:	प्रथम – कुश श्रीवास्तव, द्वितीय – सुशील कुमार सोलंकी, तृतीय – प्रतिभा जेना, विशेष पुरस्कार – बिंदु सुरेश
सुलेख लेखन	:	प्रथम – अंकित कुमार, द्वितीय – आनंद किशोर सिंह, तृतीय – अजय कुमार विनोदिया, विशेष पुरस्कार – रिपन रंजन विश्वास
हिन्दी टंकण	:	प्रथम – सुनील कुमार जायसवाल, द्वितीय – पुष्पेन्द्र सिंह, तृतीय – सरिता पंवार, विशेष पुरस्कार –प्रदीप हेडाऊ
अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद	:	प्रथम – प्रतिभा जेना, द्वितीय – सर्वोच्च कुमार (छात्र), तृतीय – पियूष कुमार सिसोदिया (छात्र), विशेष पुरस्कार – मनीष व्ही. झोकरकर
प्रशासनिक/तकनीकी शब्दावली	:	प्रथम –आनंद किशोर सिंह, द्वितीय – वीरेन्द्र श्रीवास्तव, तृतीय – प्रतिभा जेना, तृतीय – अजय कुमार विनोदिया, विशेष पुरस्कार – बिन्दु सुरेश
कार्यालय टिप्पण/हिन्दी प्रारूपण	:	प्रथम –आनंद किशोर सिंह, द्वितीय – अजय कुमार विनोदिया, तृतीय –सरिता पंवार, विशेष पुरस्कार –बिन्दु सुरेश
तात्कालिक बोल	:	प्रथम –अभिनव श्रीवास्तव, द्वितीय – आनंद किशोर सिंह, तृतीय – प्रतिभा जेना
तात्कालिक बोल (छात्रों के लिए)	:	प्रथम –जयती दुदानी (छात्र), द्वितीय – आशिक राज (छात्र), तृतीय – सर्वोच्च कुमार (छात्र), विशेष पुरस्कार – प्रियंका काकोटी (छात्र)

पूर्व निदेशक का विदाई समारोह

दिनांक 23 जुलाई 2017 को संस्थान के सभाकक्ष में प्रोफेसर चेतन वैद्य, निदेशक, एस.पी.ए. भोपाल का कार्यकाल पूर्ण होने पर विदाई समारोह आयोजित किया गया। प्रो. चेतन वैद्य सितंबर 2012 से योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, दिल्ली के निदेशक हैं। एस.पी.ए. भोपाल में निदेशक (प्रभारी) प्रो. वैद्य का कार्यकाल 26 अक्टूबर 2015 से 24 जुलाई 2017 तक का था।

मातृभाषा दिवस

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल में दिनांक 3 मार्च 2017 को मातृभाषा दिवस मनाया गया। उक्त दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रनिर्माण में मातृभाषा की भूमिका के संदर्भ में विभिन्न कार्यक्रमों (वाद विवाद, गायन एवं पोस्टर प्रदर्शन) का आयोजन किया गया। वाद विवाद कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने आधुनिक जीवन में राष्ट्रभाषा का योगदान, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, वैश्विक प्रभाव पर मातृभाषा की भूमिका, देश की संस्कृति का उद्भव, निर्माण एवं विकास पर चर्चा की। संस्थान द्वारा नामित निर्णायक मण्डल ने सभी प्रतियोगिताओं का आंकलन किया। संस्थान के सभी कर्मचारी व अधिकारीगण व छात्र–छात्राओं ने उक्त कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक अपनी सहभागिता दर्ज की।

संस्थान क्लब

एस.पी.ए. भोपाल परिसर में संस्थान के कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों के लिए प्रारंभिक तौर पर अस्थायी रूप से संस्थान क्लब तैयार किया गया है। क्लब में टेबल टेनिस, कैरम बोर्ड, चेस बोर्ड व अन्य इनडोर गेम्स, बच्चों व बड़ों के लिए लघु पुस्तकालय, मैग्जीन सेंटर, सामाजिक गतिविधियाँ/कार्यक्रमों के आयोजन की सुविधा उपलब्ध है।

स्वच्छ भारत पखवाड़ा

स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत हमारे संस्थान ने युवकों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने हेतु विभिन्न गतिविधियाँ एवं प्रतियोगिताएं आयोजित की। आंदोलन का मुख्य उद्देश्य स्वच्छता के विचार को बढ़ावा देने में संकाय, छात्र और कर्मचारियों की भागीदारी को प्रोत्साहित करना था। अपशिष्ट निपटान प्रबंधन समिति ने 8 सितम्बर को एक स्वच्छ परिसर अभियान का आयोजन किया जिसमें बड़ी संख्या में भागीदारी देखी गई और यह बहुत बड़ी सफलता थी। स्वच्छता की शुरूआत कैन्टीन एवं बालक छात्रावास से की गई। समिति ने अपशिष्ट पेपर एकत्रित किए जो रिसाइक्लिंग के लिये दे दिया गया। उसी दिन एसपीए भोपाल की ड्रामा सोसायटी ने एक नुक्कड़ नाटक आयोजित किया जिसका शीर्षक था ''मेरा शहर साफ हो जिसमें मेरा भी हाथ हो'', यह 14 लोगों की टीम थी और इस एक्ट की अवधि 11 मिनिट थी। इसी एक्ट को तूर्यनाद 16 मैनिट में आयोजित करने के लिये चयनित किया गया एवं 11 सितंबर 2016 को वहां भी प्रदर्शित किया गया।

पखवाड़े के अगले दिवस, परिसर में अपशिष्ट संग्रह अभियान कराया गया। इसके बाद पोस्टर प्रतियागिता एवं निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस अभियान के तहत 100 किग्रा. अपशिष्ट संग्रह किया गया। अंतिम दिन, महत्वपूर्ण समारोह आयोजित हुआ जिसमें सभी उपरोक्त प्रतियोगियों के लिये पुरस्कार वितरण शामिल था। अंत में, संगीत समिति एवं नृत्य समिति ने एक – एक प्रस्तुति कर स्वच्छ भारत पखवाड़े का समापन किया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर दिनांक 19 – 21 जून 2017 के मध्य तीन दिवसीय योग शिविर का आयोजन संस्थान के प्रांगण में किया गया। इस शिविर में संस्थान के छात्र, संकाय व कर्मचारीगण उपस्थित हुए। उपस्थित जनसमूह की सुविधा एवं सुरूचिपूर्ण ढंग से योग कराने के लिए मंच तैयार किया गया था जिस पर बैठ कर योग प्रशिक्षकों (विवेकानंद केन्द्र, भोपाल) द्वारा विभिन्न यौगिक मुद्राओं का प्रदर्शन किया गया, जिनको देखकर समस्त जनसमूह ने उन क्रियाओं को दोहराया।

कार्यक्रम का आरंभ संस्थान के कुलसचिव राजेश मौज़ा की विशेष उपस्थिति में किया गया। कार्यक्रम में योगासनों की क्रियायें हुई जैसे ग्रीवा संचालन, घुटनों की क्रियायें, ताड़ासन, पादहस्तासन, अर्धचक्रासन, त्रिकोणासन, भद्रसनासन, शषांकासन, वक्रासन, मकरासन, भुजंगासन, शलभासन, सेतुबंधासन, पवनमुक्तासन, शवासन, कपालभाती, अनुलोम विलोम, भ्रामरी, ध्यान का अभ्यास कराया गया। कार्यक्रम में योग क्रियाओं के साथ–साथ प्रतिभागियों की पोस्टर एवं स्लोगन निर्माण की प्रतियोगिता भी सम्पन्न हुई। प्रतिभागियों ने मानव जीवन में योग के महत्व को समझा, योग करना सीखा व प्रतिदिन योगाभ्यास करने हेतु प्रेरित भी हुए।

खेल गतिविधियाँ

स्वतंत्रता दौड़ : आयोजित स्वतंत्रता सप्ताह में दिनाँक 12 अगस्त 2016 को संस्थान में स्वतंत्रता दौड़ का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के समस्त छात्र–छात्राएं एवं कर्मचारीगण–अधिकारीगण ने भाग लिया।

बास्केटबॉल मैच : दिनाँक 15 अगस्त 2016 को बास्केटबाल मैच संकाय समूह एवं कर्मचारियों के मध्य नवीन बास्केटबॉल कोर्ट के उद्घाटन अवसर पर खेला गया जिसमें रोमांचक मुकाबले में कर्मचारी टीम ने संकाय टीम को नजदीकी अंतर से हराया एवं जीत हासिल की। संकाय समूह के श्री सुशील सोलंकी को मैच के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का खिताब मिला।

हैंडबॉल प्रतियोगिता : दिनाँक 20–24 अक्टूबर को आई.आई.टी. बी.एच.यू. बनारस 'स्पर्धा' में संस्थान के छात्रों ने राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में भाग लिया एवं हैंडबाल प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए जीत हासिल कर द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

एकता दौड़ : दिनाँक 04–06 नवंबर 2016 को एकता सप्ताह के अंतर्गत खेल प्रतियोगिता एवं मिनी मैराथन ''एकता दौड़'' का आयोजन किया गया जिसमें समस्त छात्र–छात्राएँ, कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने भाग लिया। एकता सप्ताह के अंतर्गत बास्केटबॉल, बॉलीबाल, टेबल टेनिस एवं बैडमिंटन की प्रतियोगिता आयोजित की गई।

क्रिकेट मैच : गणतंत्र दिवस के अवसर पर, एस.पी.ए. भोपाल के कर्मचारियों एवं अधिकारियों की क्रिकेट टीम का मैच आई.आई.ए. भोपाल की टीम के बीच खेला गया। इस मैच में एस.पी.ए. भोपाल ने जीत हासिल की। एस.पी.ए. भोपाल के श्री मुकेश उपाध्याय को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का खिताब प्राप्त हुआ।

त्वरण: एस.पी.ए. भोपाल की स्टूडेंट स्पोर्ट टीम ने ए.बी.व्ही. आई.आई.आई.टी.एम., ग्वालियर द्वारा 31 मार्च से 2 अप्रैल 2017 के मध्य आयोजित राष्ट्रीय स्तर की खेल प्रतियोगिता ''त्वरण'' में 8 शैक्षणिक संस्थाओं ने भाग लिया। खेल प्रतियोगिताओं में बैडमिंटन, टेबल टेनिस, वॉलीबाल, क्रिकेट, मैराथन, दौड़, फुटबाल, वास्केटबाल आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। उक्त उप्रतियोगिता में टीम समन्वयक श्रीमती वृषभानलली रघुवंशी (सहा. प्राध्यापक), श्री मुकेश उपाध्याय समेत 59 छात्र–छात्राओं ने भाग लिया जिसमें से संयोगिता राना, बी.आर्क. प्रथम वर्ष ने 200 मी, दौड़ एवं मैराथन (छात्रा) में एवं शुभम संत, बी.आर्क. तृतीय वर्ष ने मैराथन (छात्र) में जीत हासिल कर, मेडल एवं पुरस्कार प्राप्त किये।

छात्रों की उपलब्धियाँ

तमयौज़ इंटरनेशनल अवार्ड: तमयौज़ इंटरनेशनल अवार्ड प्रतियोगिता में संस्थान के छात्र निपुण प्रभाकर ने अपनी थीसिस पर तृतीय स्थान प्राप्त किया। उक्त प्रतियोगिता में अंतराष्ट्रीय स्तर पर 30 देशों के 88 विश्वविद्यालयों से 420 छात्रों ने भाग लिया था।

नियासा (NIASA): बी.आर्क. अंतिम वर्ष के छात्र निपुण प्रभाकर, अहमदाबाद में आयोजित जोनल नियासा जूरी में विजयी घोषित हुए। उक्त प्रतियोगिता में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, मध्यप्रदेश एवं गुजरात राज्य के 67 महाविद्यालय शामिल थे।

बर्कले पुरस्कार: बर्कले पुरस्कार निबंध प्रतियोगिता–2017 में संस्थान की छात्रा साक्षी खरे एवं विधि वाधवान को एक्सप्रेशन ऑफ एस्पाइरेशन: यूनाईटेड बाई नाइट विषय पर बर्कले पुरस्कार दिया गया।

प्रतियोगिता 'मेक युअर सिटी स्मार्ट': भोपाल स्मार्ट सिटी डेवलपमेंट कार्पोरेशन लिमिटेड द्वारा 'मेक युअर सिटी स्मार्ट' विषय पर आयोजित प्रतियोगिता में डॉ. क्षमा पुणताम्बेकर के मार्गदर्शन में संस्थान के छात्र गौरव दास महापात्रा (एमयूआरपी, द्वितीय वर्ष), पुल्कित सिंगल (बी. प्लान, तृतीय वर्ष), उदित सरकार (एमयूआरपी, प्रथम वर्ष), जिन्निया साहा (एमयूआरपी, प्रथम वर्ष) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

आई.टी.पी.आई. अवार्ड: संस्थान के एम.प्लान एवं बी. प्लान के छात्र परिक्षित मेहता, गौरव दास महापात्रा, आकाश चौहान, जगन्नाथ दास, अमन सिंह राजपूत ने आई.टी.पी.आई. एमपी चेप्टर अवार्ड जीतकर संस्थान को गौरवान्वित किया।

वर्ल्ड आर्किटेक्चर फेस्टिवल: वर्ल्ड आर्किटेक्चर फेस्टिवल 16–18 नवम्बर 2016 को बर्लिन, जर्मनी में आयोजित किया गया। समारोह में दुनिया भर से 2000 से अधिक वास्तुकारों ने अपनी भागीदारी सुनिश्चित की एवं व्याख्यान और प्रस्तुतिकरण के माध्यम से समारोह को सफल बनाया। योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल की ओर से छात्रों की एक टीम डॉ. संजीव सिंह के समन्वयन में समारोह में सम्मिलित हुई। ''विरासत में मिली चंदेरी की बुनाई को सिल्क के माध्यम से पुनः तैयार करने के विषय पर योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के प्रस्ताव को छात्र चैरिट श्रेणी के लिये विश्व विजेता घोषित किया गया एवं इस हेतु 3 दिवस का लक्ष्य कार्यक्रम छात्रों को दिया गया था।

नोस्प्लान सम्मेलन: नेशनल नोस्प्लान काउंसिल, नई दिल्ली द्वारा आयोजित नेशनल नोस्प्लान ऑनलाइन सम्मेलन 2016 में एस.पी.ए., भोपाल के छात्रों ने लगातार तीसरी बार अपनी रैंक को बरकरार रखा। हमारे छात्रों ने इवेंट के दौरान प्रत्येक तकनीकी प्रतियोगिता में अपनी उल्लेखनीय छाप छोड़ी। सम्मेलन में प्रतियोगिता के विषय एवं संस्थान के विजयी छात्रों के नाम निम्नलिखित हैं: डेवलेपमेंट प्लान में प्रथम पुरस्कार – अमन सिंह राजपूत, आयुष गर्ग, महक दावरा, सौरभ जोशी और धारणा डांग एवं द्वितीय पुरस्कार – अमन सिंह, ज्योति, आस्था सेठी, जिन्नी शिरोमणी और दीक्षित विश्वास ने प्राप्त किया। स्मार्टनिंग युअर फ्यूचर स्केप्स में प्रथम पुरस्कार – रोहन मिश्र और तान्या कौर बेदी एवं तृतीय पुरस्कार– हरिदास और दामिनी राठौर ने प्राप्त किया। एस ड्रेस्टिक एस डेमोनेटिसेशन में द्वितीय पुरस्कार–शिवम मित्तल ने प्राप्त

किया। डायरेक्टर कट में द्वितीय पुरस्कार–एल. महेश दत्त, भातृगव चारी, कुलदीप वम्सी काडा ने प्राप्त किया। बेटरिंग प्रेक्टिस में तृतीय पुरस्कार– सीलम जोशी ब्लेज, सैली मोस्बी, रवि पांडे और रिधिमा कंवल ने प्राप्त किया।

वास्तुकला छात्र राष्ट्रीय संघ (नासा): 59 वां नासा कार्यक्रम पूर्णिमा यूनिवर्सिटी, जयपुर में दिनांक 15–20 जनवरी 2017 को आयोजित किया गया। उक्त कार्यक्रम में एस.पी.ए. भोपाल के छात्रों ने सहभागिता ली। कार्यक्रम में कुल 9 प्रतियोगिताओं में संस्थान के छात्रों ने भाग लिया जिसमें से जी सेन ट्रॉफी, एएनडीसी लुइस काहन एवं रूबेन्स ट्राफी, यूओडब्ल्यू ट्रॉफी में छात्र पुरस्कृत हुए।

छात्र गतिविधियाँ

लाइव स्केचिंग: कला एवं हस्तशिल्प क्लब ने एक लाइव स्केचिंग सत्र का आयोजन किया जिसमें छात्रों को वन विहार ले जाया गया। इस इवेंट में लगभग 50 छात्रों ने हिस्सा लिया। लाइव स्केचिंग मुख्य फोकस होने के कारण बहुत से छात्रों ने रेखा चित्र करना सीखा जबकि अन्य परिदृश्य में शामिल थे।

स्पेस 2.0: हमारे संस्थान का संगीत महोत्सव स्पेस 2.0 दिनांक 12 नवम्बर 2016 को संगीत समिति द्वारा बालिका छात्रावास के प्रांगण में आयोजित किया गया। इस समारोह में संस्थान के छात्रों द्वारा बॉलिवुड से लेकर रॉक से पॉप तक कुल 30 प्रदर्शन हुए। इस हेतु कार्यक्रम स्थल बड़ी खूबसूरती से सजाया गया था।

शालोम विद्यालय की यात्रा: प्रिशा, हमारे कॉलेज के रोट्रेक्ट क्लब ने स्कूल के छात्रों से मिलने के लिये शालोम विद्यालय (विकलांगों का विद्यालय) का दौरा किया। इस दौरे में, हमारे संस्थान के छात्रों ने शालोम विद्यालय के छात्रों को शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक विभिन्न विषयों को सिखाया जिसमें कला और शिल्प, पेंटिंग, मिट्टी की मॉडलिंग, अंग्रेजी एवं गणित आदि शामिल हैं।

साहित्यिक एवं प्रश्नोत्तरी उत्सव: साहित्य एवं अभिनय समिति के द्वारा 20 – 21 नवम्बर 2016 को एनएलआईयू साहित्य और प्रश्नोत्तरी महोत्सव के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया गया। ड्रामा क्लब ने उक्त प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार जीता, संस्थान के कार्यक्रमों में हिस्सा लेना साहित्य समिति के सदस्यों के लिये एक महान प्रदर्शन था।

कलरव: 2016 बैच के नये छात्रों का स्वागत महोत्सव कलरव आयोजित किया गया। कार्यक्रम का सफलता पूर्वक संचालन बॉलीवुड डीजे नाइट के द्वारा हुआ।

अनुभूतिः एसपीए भोपाल के फोटोग्राफी क्लब के द्वारा भारत भवन में फोटोग्राफी प्रतियोगिता और प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। यह एक बहुत ही सफल इवेंट था। क्लब को पूरे देश से प्रविष्टियाँ मिली व विशाल सहभागिता देखी गई।

राहगिरीः प्रिशा–संस्थान के रोट्रेक्ट क्लब ने 26 मार्च 2017 को बोट क्लब रोड, बड़ा तालाब में राहगिरी–2017 का आयोजन किया।

स्पेडियोजः स्नातक के तृतीय वर्ष के छात्रों एवं स्नातकोत्तर के प्रथम वर्ष के छात्रों ने मिलकर स्नातक एवं स्नातकोत्तर के लिये विदाई समारोह आयोजित किया। अंतिम बैच के सभी छात्रों को एक शीर्षक एवं एक मूमेंटो दिया गया जो कि उनके व्यक्तित्व पर झलकता था। कार्यक्रम का मनोरंजन बॉलीवुड डीजे द्वारा किया गया।

सिनर्जीः एस.पी.ए., भोपाल में सिनर्जी 2के6, तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन बड़े हर्षोल्लास के साथ हुआ। कार्यक्रम में प्रतिभागियों को चार टीमों में (कुकडू कू, देशी डकैत, रैपिक गणराज्य, बुलेट वॉल) प्रतिस्पर्धा हेतु बांटा गया। पहले दिन कार्यक्रम में लगभग 65 छात्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा आयोजित की गई। जिसमें बैचलर एवं मास्टर के छात्रों की आनन्ददायक भागीदरी थी। दूसरे दिन 2016 बैच के नये छात्र कार्यक्रम में उपस्थित हुए। कलरव 2के6 की थीम सुनहरी थी। कार्यक्रम का संचालन बालीवुड डीजे नाइट दिल्ली से आई सोनिया खन्ना के द्वारा किया गया। तीसरे दिन सभी औपचारिक प्रतियोगितायें जैसे नृत्य, नाटक, बैंड प्रदर्शन, फोटोग्राफी, फैशन शो शामिल थे। प्रतिभागियों को सुबह थीम दी गई एवं तैयारी के लिये 4 घंटे दिये गए। कार्यक्रम का शुभारंभ बैंड प्रदर्शन से हुआ एवं प्रतिभागियों द्वारा प्रतियोगिता आयोजित की गई प्रतियोगिता की जज़ डॉ. क्षमा पुणताम्बेकर थी जिन्होंने प्रतियोगिता के पश्चात परिणाम घोषित किये।

चिल्ड्रन पार्क

एस.पी.ए. भोपाल परिसर में संस्थान के कर्मचारियों एवं उनके परिवार के बच्चों के लिये चिल्ड्रन पार्क का निर्माण किया गया है।

आज की लड़की

शैव्या सिंह
द्वितीय वर्ष (एम.ई.पी.)

आज के जमाने की लड़की हूँ मैं,
देखी है मैने ये दुनिया दूसरों से कहीं ज्यादा,
अच्छाइयां भी देखीं और बुराइयां भी,
सहा है बहुत कुछ पर कुछ कहा नहीं,
क्योंकि आज के जमाने की लड़की हूँ मैं।

बहादुर हूँ, निडर हूँ, सबल हूँ मैं,
अंधेरे से नहीं डरती, न ही जिन्दगी की कठिनाइयों से,
अनजान राहों से पीछे नहीं हटती,
चाहे उस पर अजनबी लोग मिलें या परिस्थितियां,
क्योंकि आज के ज़माने की लड़की हूँ मैं।

समझदार हूँ, दृढ़ हूँ, अडिग हूँ मैं,
लड़ जाती हूँ, लोगों से अपने हक के लिए,
पर दूसरों का दर्द भी समझती हूँ,

दुःखी होती हूँ पर दिखाती नहीं किसी को,
क्योंकि आज के ज़माने की लड़की हूँ मैं।

समर्थ हूँ, सरल हूँ, सहनशील हूँ मैं,
लोगों द्वारा कई बार तोड़ी गयी हूँ,
उन्ही टुकड़ों से समिट के फिर बनी हूँ,
जख्मी हो के भी आगे बढ़ी हूँ,
क्योंकि आज के ज़माने की लड़की हूँ मैं।

मिलनसार हूँ, उदार हूँ, शर्मीली हूँ मैं,
रास्तों में तीक्ष्ण नज़रों को झेला है मैंने,
अपनों द्वारा धोखे भी खाये हैं,

दबंग हूँ, प्रबल हूँ, जिद्दी हूँ मैं,
रूकावटों से लड़के अपनी राहें चुनती हूँ,
न रूकती हूँ, न झुकती हूँ, न ही हार मानती हूँ,
खुद ही अपनी तलवार हूँ,
और खुद ही अपनी ढाल भी हूँ,

क्योंकि आज के ज़माने की लड़की हूँ मैं...
क्योंकि आज के ज़माने की लड़की हूँ मैं।

मिट्टी

अभिषेक
बी. प्लान, तृतीय वर्ष

मिट्टी में ही जन्मे, मिट्टी से ही जान।
मिट्टी ही देती है, हमें पहचान।
इस मिट्टी से ही बनती है, हमारी शान।
तो क्यूँ न करे हम अपनी मिट्टी का अभिमान।
मिट्टी में से निकले हम, मिटटी में ही जीना।
मिट्टी अपनी बुलाये जब होता है मरना।
इस मिट्टी के रंग हैं, अनेक।
काली, लाल, भूरी और कहीं सिर्फ रेत।
कहीं है ये उपजाऊ और कहीं पर बंजर।
कहीं पर ये हमारे बोझ का भार लेती अन्दर।
इसके आशीष में रहते सब जानवर।
कही तो सिर्फ बसे हुए है, इसके ऊपर शहर।
इसका रूप बदल जाता है हर स्थान पर।
कही पर पर्वत कहीं पर समतल।
कहीं पर सिर्फ पठार।
कहीं पर पानी के साथ बह जाती मिलकर।
न दोष इसका न कर्म इसका,
लेकिन फिर भी जगह छोड़ती ये भूलकर।
कि आएगी उस स्थान पर नया रूप लेकर।
चाहे वो हो दंगल या हो कोई फसल।
इसके लिए तो हो जाते है लोगो के कतल।
तभी मिट्टी के लिए लड़ना भी अभिमान है।
इसी में जन्मे इसी में मिलना ये हमारी शान है।

तलाश

रितिका सिंघल
बी.आर्क. प्रथम वर्ष

यूँही एक दिन ख्यालों में खुद को खोजने चली थी,
किताबों के कुछ नए पन्ने खोलने लगी थी,
अन्धेरी दिल की घंटियों में ढूँढना था कहीं नूर,
क्या पता था वहीं छुप के बैठा था नटखट गुरूर,
घाटी के परे शांत समन्दर सबने चाहा था,
मैने जाना समन्दर क्युँ इतना चिल्ला रहा था,
हवाओं की अदाऐं सबको लुभाती है
सोच के दिल मेरा भी ललचाया,
देख खमियों को सादगी का सिर सहलाते,
मैने खुद को समझाया,
आगे ऊँचे पहाड़ देख दिल में ख्वाहिशों ने जगह बना ली थी,
दिल ढलने लगा था, पर मैंने ना रूकने की ठानी थी,
रात के सन्नाटे में फिर कहीं हिम्मत को टूटते देखा मैंने,
दौड़ के सपनों की चुनरी में, टुकड़ों को समेटा मैने,
नया सूरज सरमा के निकल रहा था,
मानो मुझे कह रहा हो, मैं तुम्हे ही तो याद कर रहा था,
आगे एक बाग में फूलों का रैन बसेरा देख हसरतों के पैर डगमगाने लगे,
कुछ दूर पे रोते बादल मिले, बचपन उनका खोया था,
मैने भी कुछ उनके आँसुओं में सिमट के अपने बचपन का रोना रोया था,
एक बूढ़े पेड़ ने खाँस के पूछा और कितनी दूर जाना है,
दो पल ठहर के मैने बोला मंजिल को तो अन्दाजा नहीं,
सफर बड़ा सुहाना है,
कंकड़ों की सड़क मेरी नादानी पे ज़ोरो से हसने लगी,
और मैं अपनी गलतियों की चप्पल पहन फिर आगे बढ़ने लगी।

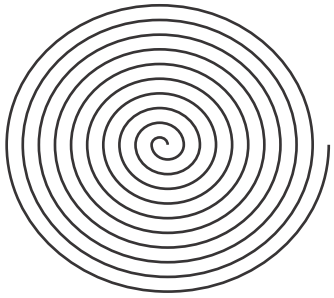

आत्मोदय

पीयूष कुमार शिशौदिया
बी. प्लान, चतुर्थ वर्ष

लक्ष्य जो भी है तू कर विश्वास अपने तीर पर,
आत्मोदय होगा तेरा फिर इस तिमिर को चीरकर।

मंडरा रहा सर पर समय, मन शून्य तेरा हो रहा
अविराम सा न रुक सके, उत्साह पल-पल खो रहा
कोशिश में है काली घटा, कि ढक सके इस तेज को
कोई रोक दे विपरीत चलती इस पवन के वेग को
हर क्षण रहे व्याकुल ये अंतर्मन शिखर को चूमता
कर्तव्य रथ भी लड़खड़ाता मन्दगति में झूमता
है मौन क्यों मस्तिष्क जिह्वा क्यों गले में जा घुसी
है रोग क्या अब यह निरंतर प्रश्न मन में घूमता

जब थाम लेंगे स्वयं छूटी डोर तेरी मुरलिधर,
आत्मोदय होगा तेरा फिर इस तिमिर को चीरकर।

आभास है तूफान का, होती हृदय में गर्जना
काँपता भय से है फिर भी क्यों खड़ा पत्थर बना
है तू सक्षम तब मिला सौभाग्य इस दायित्व का
यह जान ले कि महत्व कितना है तेरे अस्तित्व का
गर चल पड़ा पीछे न हट मुश्किल स्वभाविक राह में
त्वरित कर निर्णय है अंतर विवशता और चाह में
हो समर्पित तू हृदय से गीत जिस दिन गायेगा
घोर आँधयारा हटाकर प्रज्जवलित हो जायेगा

है प्यास तो हो उठ खड़ा खाली घड़े में नीर भर,
आत्मोदय होगा तेरा फिर इस तिमिर को चीरकर।

नानी का घर

स्वप्निल लौवंशी
कनिष्ठ सहायक

वो बचपन की यादें वो नानी का घर,
वो खेल खिलौने वो नानी का घर,
वो किस्से पुराने वो नानी का घर
वो सपने सुहाने वो नानी का घर,
भुलाए नहीं भूल सकता है कोई,
वो गर्मियों की छुट्टियाँ वो नानी का घर।

वो नानी के साथ रोज बाजार जाना,
वो नानी का आइसक्रीम और चाकलेट खिलाना,
वो फरमाइशों कि लंबी सूची बनाना,
वो नानी से हर जिद को पूरा कराना,
भुलाए नहीं भूल सकता है कोई,
वो आइसक्रीम वो चाकलेट वो नानी का घर।

वो रातों को जगकर कहानियाँ सुनाना,
वो आँचल के साए में हमको सुलाना,
वो नानी की कहानियों में परियों का डेरा,
वो चेहरे की झुर्रियों में सदियों का फेरा,
भुलाए नहीं भूल सकता है कोई,
वो लंबी कहानी वो नानी का घर।

वो पूजा की थाली में दीपक लगाना,
चंदन, कुमकुम, हल्दी चावल सजाना,
हल्वा, खीर-पुरी का भोग लगाना,
अगरबत्ती की खुशबू से घर महकाना,
भुलाए नहीं भूल सकता है कोई,
वो खुशबू सुहानी वो नानी का घर।

वो बचपन की यादें वो नानी का घर।
वो किस्से पुराने वो नानी का घर।।

अर्पण

विशाखा कवाठेकर
सहायक प्राध्यापक (वास्तुकला)

जिंदगी में
फूल भी है, कांटे भी,
आशा भी, निराशा भी।
सूरज की तपिश को भी लग जाता है ग्रहण,
जिन्दगी नही रूकती, चले चलती है अपनी प्रहर।
मैने आपको माना है अपना 'गुरू',
क्योंकि बहुत सी अच्छाइयाँ सीखी है मैंने।
मैंने माना है आपको 'रक्षक',
क्योंकि सुरक्षा के कवच को महसूस किया है मैंने।
रहे सदा आपका आर्शीवाद मुझपे,
हो सपना आपका पूरा।
देखा है जो आपने मेरे लिए,
तूफान तो आयेंगे और थम भी जायेंगे।
रहें मुझमें यह नम्रता,
न बदलूँ मैं और न ही हमारा रिश्ता।

मनुआभान की टेकरी

जयति दुदानि
द्वितीय वर्ष, वास्तुकला

सुरम्य पहाडी सघन वन,
बाँह पसारे विंध्याचल।
सूर्यास्त जहाँ भोजपाल का,
इक सूर्य उदित किया राजा भोज ने।
तपोभूमि मनीषियों की,
दिव्य दर्शन महावीर का।
पुनर्सृजित वाटिका,
त्रिशिखरीय अट्टालिका।
कलात्मकता की झाँकी,
नैसर्गिक सौंदर्य की परीपाटी।
श्रद्धा, शान्ति, सौंदर्य, सुकून से परिपूर्ण,
सादर नमन टेकरी मनुआभान की।

पर्यावरण

प्रतिभा सिंह
बहुप्रवीणता सहायक

जो श्रावण मास की बूँदें पड़ते ही,
धरती को ओढ़ा देता है सब्ज आवरण।
वही है हमारा पर्यावरण।।

जो कहता है मत काटो वनों को,
रोक लो मृदा का क्षरण।
वही तो है हमारा पर्यावरण।।

एक दिन बचेगा बस अखाद्य ही खाने को,
न मिलेगा अनाज, फल, सब्जी करने को ग्रहण।
बचाओ इसे यह है पर्यावरण।।

यदि प्रदूषित हो जाएगा हवा और पानी भी,
सोचो खग व जलचर किस भांति करेंगे विचरण,
बनाओ इसे प्रदूषण मुक्त पर्यावरण।।

'बायो-डाइवर्सिटी' का भविष्य है खतरे में,
होता जा रहा है जीव-जन्तु, कीटों का मरण।
इनको बचाकर ही बचेगा पर्यावरण।
उपभोगी वस्तुओं का करते समय चयन,
अगर हम करें, 'ईको-फ्रेन्डली' का ही वरण।
तो शायद बच जाए हमारा पर्यावरण।।

एक पल में सम्भव है नही,
शुरूआत हो चुकी है, बाकि हैं कई चरण।
बचा ही लेंगें अपना पर्यावरण।।
संसाधनों का न करें अनुचित दोहन,
आपका व्यर्थ, किसी के लिए उपयोगी है आभरण।
पुनः उपयोग द्वारा बचाएं पर्यावरण।।

अभी सुनिश्चित नहीं है चाँद या मंगल पर रहना
अभी तो पृथ्वी ही देगी हमें शरण।
हमें तो बचाना ही है हमारा पर्यावरण।।

इंतजार

धारणा डांग
बी. प्लान, तृतीय वर्ष

कब तक करें इंतजार,
इक साफ - सुथरे शहर का उस पार ?
उस शांत सी दुनिया की तलाश,
जहाँ हो एक प्यारा सा नीला आकाश।
छोड़ दें हम अपनी कारों का साथ,
जाएँ काम पर थामें एक दूसरे का हाथ।
प्रतीक्षा है उस पल की,
जब सडकें होंगी हल्की।
करें हम मेट्रो व बसों का उपयोग,
और स्मार्ट हो जाएँ हम सब लोग।
न हो हवा में कोई धुआं,
और भरा रहे पानी से हर एक कुआँ।
न हो बिजली का कोई झंझट,
न हो पानी की कोई किल्लत।
पेड़ ही पेड़ हों चारों ओर,
हो महिलाओं की सुरक्षा की डोर।
बस उसी पल का है इंतजार,
जब खुशहाली की आएगी बहार।
जब हरियाली होगी चारों ओर,
बीतेगी यह काली रात और आएगी नई भोर।

दैविक वार्तालाप

सौरभ तिवारी
सहायक प्राध्यापक (वास्तुकला)

(छात्रगणों के आलस्य के साथ संघर्ष को समर्पित)

बढ़ रहे वक्त के कांटे,
टिक टिक टिक कर हमें डांटे।

सुई अटके या न अटके,
घंट ध्वनि बज जायेगी।
सुबह के लालिमा पश्चात
तपती कालीरात आ जायेगी।।

कैसे रोके इस काल को?
कैसे यह काल हमारा है?
इस काल न बुझा यह सवाल,
तो कल विकराल हमारा है।

हंसो मत, न कूदो, न चिढ़ाओ,
पता है हमें, यह जाल भी तुम्हारा है।
ध्यान रखो तुम्हारे उल्लास में छिपा,
जवाब सिर्फ हमारा है।
हो जाएगा हल यह सवाल,
फिर भविष्य काल हमारा है।

जागृति

सुनील कुमार जायसवाल
हिन्दी सहायक

अभी-अभी हुई धड़कने पल्लवित,
अभी तो सपने जागे हैं।
पिता की गोद, माँ का आँचल,
सब कुछ अपना सा लागे है।
रंग बिरंगी दुनिया में आने को
मेरा भी मन ललचावे है।

मेरे आने से क्यों रूष्ट हो ये भी तो बतलाओ।
अपने अंतर्मन को जगाओ.. अपने अंतर्मन को जगाओ।

माँ की सिसकियाँ बिलख रही है,
अँश्रू की धारा छलक रही है।
सोई नहीं है माँ मेरी,
मुझे खोने के भय से किलप रही है।
माँ की वेदना को तो समझो, उसको न ठुकराओ।
अपने अंतर्मन को जगाओ.. अपने अंतर्मन को जगाओ।

तुम जो चाहोगे वो करूंगी, तुम जो सोचोगे वो बनूंगी।
साकार करूंगी तुम्हारे सपने, कभी नजर न झुकने दूंगी।
गर्व करोगे मुझ पर एक दिन, मेरे नाम से इठलाओ।
अपने अंतर्मन को जगाओ.. अपने अंतर्मन को जगाओ।

मेरे लिये ही क्यूं चिंतन है, मुझसे तो संसार का जन हैं।
माँ, पत्नि और बहन बिना, इस जग में परिवार नहीं है।
मुझ बिन ये संसार नहीं है, जीवन का आधार नहीं है।
रूढ़िवादिता के जाल में फंसके सत्य को न झुठलाओ
अपने अंतर्मन को जगाओ.. अपने अंतर्मन को जगाओ।

झीलों का शहर भोपाल

जयति दुदानि
द्वितीय वर्ष, वास्तुकला

झीलों का शहर मैं भोपाल,
ताल से ताल मिलाने वाला मैं भोपाल,
वक्त के साथ चलता हूँ मैं,
तभी तो भोज का भोजपाल कहलाता हूँ मैं।
कल के सपने, और मेरे कुछ अपने,
बदल रहा है फिर सब कुछ, बदलूँ अब मैं भी कुछ ।
सात समंदर पार हो रही हलचल ,
देने लगी है अब मेरे दर पर भी दस्तक,
नई सुबह नया दौर है,
बदलने को अभी बहुत कुछ और है।
नही दिखता अब घरों में वो डब्बा टी .वी,
कम्प्यूटर भी हो गया अब एलइडी
फोन भी अब तो स्मार्ट हो चला है,
बटन दबाते ही मशीन से पैसा निकल रहा है ।
अब वक्त है मेरे बदलने का,
नया रूप नई शक्ल लेने का,
तमन्ना है स्मार्ट कहलाऊँ मैं,
तेज रफ्तार दुनिया संग मेट्रो में दौड़ जाऊँ मैं।
धूल मिट्टी कीचड़ से भरी गलियाँ न हों,
ना ही हो धुआँ उड़ाती बेतरतीब सड़कें ,
हरियाली से भरे वो रास्ते हों ,
जहां प्रदूषण का नामोनिशान न हो ।
शहर को जोड़ते अनंत साईकल ट्रैक हों,
बुजुर्गों को गुदगुदाते हरे भरे वॉकवे हों ,
न कभी अंधेरा छाए, न पानी की किल्लत सताए,
सौर्य ऊर्जा हर घर जगमगाए।
न हो कोई दुर्घटना, असावधानी,
आधुनिकता से हो हर गली की निगरानी,
युवाओं के सपने साकार हो जहां,
बच्चों का ड्रीम लैंड हो वहां ।
नई ऊंचाइयां छूती इमारतें हों,
एक ही छत के नीचे सब सुविधाएं हों,
कचरे की हो रीसाइक्लिंग ,
ऐसी हो स्मार्ट सिटी की प्लानिंग।
वक्त है अब स्मार्ट सिटी कहलाऊँ मैं,
दुनिया के साथ नहीं
अपितु दो कदम और आगे निकल जाऊं मैं ।

उलझन

निशा नायर
लेखापाल

मशरूफ हैं खुद सपनों में इतना,
कि रिश्तों कि हकीकत भुलाये जा रहे हैं।
अब दिल भी पत्थर सा हो चला है,
खुद से ही खुद को संभाले जा रहे हैं।
उस हाथ की अब जरूरत किसे,
जो ठोकर लगने पर थाम ले।
आँसू भी तो सच्चे नही यारों,
कि रोने को कंधा माँग लें।
इक पुतला सा व्यक्ति, बन चुका है देखो,
चंद रिश्तें जो रह गये मजबूरी समान।
दिल में बोझ लिए निभाया करते है,
अपने पराए सब बेईमान।
क्यों आज वो संस्कार नहीं,
क्यों दिलों में वो प्यार नहीं।
जो जीना सिखाए और मर मिटना भी,
क्यों आज वो एतबार नहीं।
परिजन हो या मित्र मीत,
सब तकनीकों के मोहताज हैं।
दो कदम चल के गले लगे ना,
इतनी व्यस्तता आज है।
क्यों सब यूँ हैरान हैं,
क्यों खामाखाँ परेशान हैं।
किसी से दर्द बाँट के देख तू,
फिर जीवन पुष्कर समान है।
अहम सही, अहंकार नही,
घृणा से संसार नही।
ना जूझ यूँ ही तन्हा हर पल,
हैं सब एक से, है प्यार यहीं।
समय नही, पर समय है वो,
जो रिश्ते माँगा करते हैं।
मिठास रखो और हँसा करो,
बस जीवन का सारांश यही।

अनुभूति

सौरभ तिवारी
सहायक प्राध्यापक (वास्तुकला)

भांति भांति अनुभूति मेरी,
कांति कांति महक रही।
मैं भी एक व्यक्ति हूँ,
ऐसा मुझसे चहक रही।।

है चौराहा या मंझधार यह?
राहें हजारों दिख रही।
किस पथ जाऊं मैं?
दिशाएँ सारी चमक रही।।

इस माया के जाल में,
आँखे सारी मुझे टक रही।
चलना है यहाँ से त्वरित,
यह अवस्था दहक रही।।

भूत भुलाना भयमयी,
भविष्य यात्रा भ्रामक रही?
अभी समझना निरंतर
अद्य की वाणी कहक रही।।

भांति भांति अनुभूति मेरी,
कान्ति कान्ति महक रही।
मैं भी एक व्यक्ति हूँ,
ऐसा मुझसे चहक रही।।

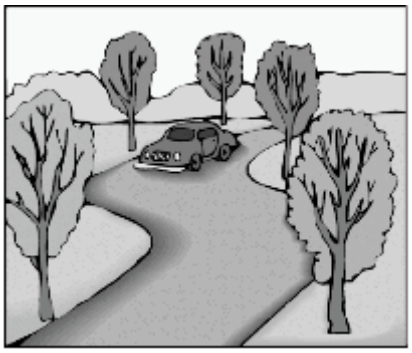

पल

आजिंक्य भागवत
बी. आर्क. तृतीय वर्ष

खास होते हैं कुछ पल जिन्दगी के,
जो अपने आप को कभी नहीं दोहराते,
बिन बुलाये ही चले आते,
कुछ मांगे बिना ही बहुत कुछ दे जाते.

ढूंढो, तोह नहीं मिलते,
पकड़ो, तोह फिसल जाते,
क्या है ये,
जिन्हें अक्सर हम समझ नहीं पाते?

इन्हें मत समझो,
इन्हें मत समझाओ,
दोनों घड़ी तुम उन्हें खो दोगे

क्यों बताऊ मैं ये बातें?
वही बात दोस्तों,
ये वापस नहीं आते

देखो,
सुनो,
महसूस करो उन्हें,
वे बरस रहे हैं.

साहसी मुसाफिर

मंजू यादव
सहायक प्राध्यापक

हे साहसी मुसाफिर, आगे बढ़ो दिल में नई आशा लेकर।
निराश और हताश होकर मत बैठ जीवन के वर्तमान परिणामों से।
शिष्टाचार नहीं निभाते आया है तू इस जमाने से।।
अपना बहुमूल्य जीवन मत व्यर्थ कर इन ठिकानों में।
आने वाले तूफान को दिखा दे अपना जोश और फौलादी इरादों को ।
अपनी भावुकता और मधुरता को अपनी कमजोरी मत समझ।
इन्हें सम्भाल कर उपयोग कर कमजोरों को हिम्मत और कठोरों को सीख देने में।
निडर मनुष्य में जीवन का रस भरा होता है।
कुटकुट कर चंद्रमा जैसी शीतलता उनके चेहरे पर
तथा सूरज सी ऊर्जा होती है उनकी हर अभिव्यक्ति में।
हे साहसी मुसाफिर, अपनी खोई हिम्मत फिर जुटा।
क्योंकि तुझे अपने रास्तों और मंजिलों का निर्माण स्वयं करना है।

यादें

कुश श्रीवास्तव
लेखापाल

लोग अक्सर अपना वादा निभाते नहीं।
जो चले जाते हैं लौट कर आते नहीं।।
क्यो याद करते हैं बार बार उनको।
क्या हम उनको भूल पाते नहीं।
महक ना चली जाए उनकी इस डर से।
हम घर पर अपने, फूल उगाते नही।।
सन्नाटे ही अच्छे थे इस शोर से।
काश अपना प्यार हम जताते नहीं।।
कही मिलेंगे किसी मोड़ पर वो।
इस भरोसे से ही हम उन्हें भुलाते नहीं।।

नकाब

कुश श्रीवास्तव
लेखापाल

चेहरे पर चेहरे हैं
राज बड़े गहरे हैं।
सच्चाई पर झूठ के
बड़े सख़्त पहरे हैं।
जीवन की झील में
सुख की कम लहरे हैं।
वैभव के लालच में
जीवन के चित्र पर तन्हाई उकेरे हैं,
धन्य है तू प्रकृति,
धरा पर तूने कितने रंग बिखेरे हैं।

बंटवारा

हर्षिल बुद्धिराजा,
पूर्व छात्र, बी.आर्क.

वो हुआ
हम भागे,
जाने खोई
आँसू टपके

खोजी छत
कपड़े पहनाए
पकाई रोटी
आँसू छुपाये

जो बचा
वो बचाया
जो खोया
वो भुलाया

बढ़े आगे
पसीने पोंछे

कमाया पैसा
इज्ज़त कमाई

भागे भीड़ मे
बच्चे भी भगाये
मुस्कुराए थोड़ा
आँसू छुपाये

ज़रा सोचा,
हिचकिचाए थोड़ा,
हुआ क्या?
क्या हुआ?

वो हुआ
हम भागे
जाने खोई
आँसू टपके

आँसू

भगवान सिंह मुखरैया,
द्वितीय वर्ष, एम.यू.आर.पी.

दिल में कुछ खुशी हो तो आ जाते हैं आँसू,
गम की हल्की सी आहत पर आँखों से झट बह जाते हैं आँसू।

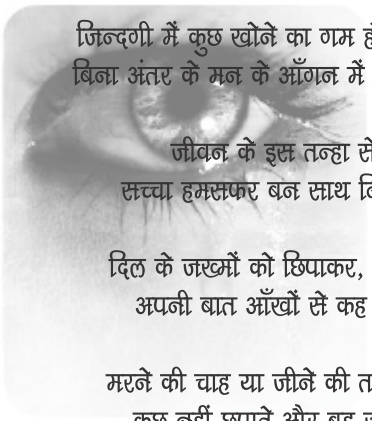

जिन्दगी में कुछ खोने का गम हो या पाने की खुशी,
बिना अंतर के मन के आँगन में बिखर जाते हैं आँसू।

जीवन के इस तन्हा से सफर में,
सच्चा हमसफर बन साथ निभाते हैं, आँसू।

दिल के जख्मों को छिपाकर, जमाने के डर में,
अपनी बात आँखों से कह जाते हैं आँसू।

मरने की चाह या जीने की तमन्ना हो दिल में,
कुछ नहीं छुपाते और बह जाते हैं आँसू।।

चार्ल्स कोरिया

प्रशांत श्रीवास्तव,
द्वितीय वर्ष, एम.यू.आर.पी.

पत्थर की शहतीरों पे कंक्रीट सा तनमन,
जमीनदोज़ आंगनों का अनोखा ये उपवन,
लज्ज़ते शहर की स्कायलाइन ना बदले,
ऐसी बेमिसाल तहरीर ये भारत भवन।
विशाल आंगन में जालीदार है छाया बारहोमास,
एक अर्बन क्यूब की परेशानी पे चढ़ रही उजास,
उग्र एक ललाट बन साइनेज मुँह चिढा रहा,
जेल रोड पर तैनात ये अलमस्त पर्यावास।
समुद्र की हवाओं से चाहे हो रखी हो अनबन,
ड्यूपलेक्सों की मटकीफोड़ का यौवन,
सस्ते हाफिजों के दौर में ऐ मुम्बई,
तुझमें आ गया कंचनजंघा का स्पन्दन।
मैसाचु, मुम्बई, भोपाल या हैदराबाद,
डॉम मोरैस, मारियो, अशोक बाजपेई के साथ,
तमगे, उपाधियां, इज्जत और ईनाम,
कोरिया तुम्हें नमन, चार्ल्स तुम्हें सलाम।

क्या सच में हम आजाद नहीं

ऋचा मिश्रा

पूर्व छात्रा, एम.आर्क (संरक्षण)

क्या सच में हम आजाद नहीं,
या तुझमें आगे बढ़ने का साहस नहीं।
युग-युग की लड़ाई में, यही हुआ है,
इधर खाई तो उधर कुआं है।
कितनी मशक्कत का परिणाम है आजाद हिन्द,
फिर क्यूं शक का दायरा इस पर आ पड़ा है।
तू तो घर में बैठा है,
साथ है परिवार।
उस सिपाही का सोच,
जो जंग पर तैनात है।
रात नहीं दिन नहीं,
सुख चैन न उसके पास है।
स्वतंत्र वो नहीं या तू नहीं,
किसका जीवन खास है।
क्या सच में हम आजाद नहीं,
या तुझमें बलिदान देने का साहस नहीं।

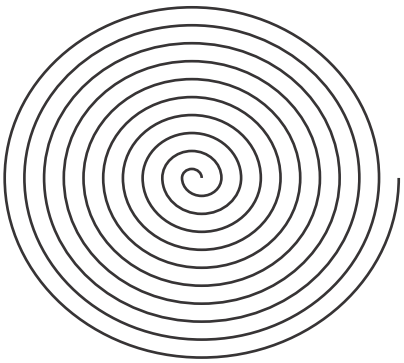

उंगली उठाकर कभी कुछ हासिल नहीं हुआ है,
आँखे खोलकर देख तू कहां खड़ा है।
चारदीवारी में बंद कुछ कर नहीं पायेगा,
उठ जा, जग जा दहाड़ शेर सा,
खुद को बदलने का वक्त आया है।
क्या सच में कोई सुनेगा नहीं,
या तुझमें आवाज उठाने का जिगरा नहीं।
थमने न देना खुद को,
तेरी आजादी का वक्त आया है।
आजाद हिन्द आज भी आजाद है,
बलिदानों का शौर्य अब भी बरकरार है।
उसकी गरिमा पर उंगली उठाने वाले का जीवन धिक्कार है।
देश की आजादी में कमी नहीं वो आज भी आजाद है।
कमी उनकी है जिनकी सोच लाचार है।
मैं एक बार फिर पूछती हूँ,
क्या सच में हम आजाद है।
ये बेड़ियां हमने खुद बांधी हैं,
इसमें किसी और का हाथ नहीं।

बादल और जमीन

कँवर, अभिषेक

बी.प्लान, तृतीय वर्ष

तरस गयी हूँ मैं, क्यों नहीं आते तुम ?

सूख रहा है दामन मेरा, क्यूँ तरसाते तुम ?

पिछली बार भी वक्त लिया और कर गए एक वादा।

भूल न मेरे शब्द अगली बार आऊँगा जल्दी मन में है इरादा।

क्या दिखाऊँ चेहरा अपना अपने इन बच्चो को।

मेरी गोद में पलते हैं ये लेकिन निर्भरता हो तुम।

तरस गयी हूँ मैं, क्यों नहीं आते तुम ?

तुम कहो तो, मैं जल्दी आ जाऊंगा।

अगर कहोगी तो तेरे पर एक बार में बरस जाऊँगा।

लेकिन तुम मेरी, स्थिति नहीं समझ पा रही।

दुनिया बाकी मुझे इतना बता रही।

सूरज चाचा, हो रहे हैं गरम।

टूट रहा हूँ मैं क्यूंकि, मैं हूँ नरम।

सुनने में तो आया कि, तेरे लाडलो की है करतूत।

जो थे सपूत, वही निकले कपूत।

जिनके लिए तू मांग रही है, इतनी भीख।

तेरी सुन्दरता को मिटाने वाले, नहीं रहे कुछ सीख।

लालच इनका तेरा अस्तित्व मिटा रहा है।

तू बैठी बस इनकी भूख मिटा रही है।

छोड़ दे इनका साथ नहीं तो, बना देंगे तुझे बंजर।

तेरी ही सीने में भोक रहे हैं, खंजर।

कुछ दिन बाद जब, मैं जाऊँगा बरस।

इनके मन में भर जाएगा, उल्लास और हरस।

फिर चलाते हैं, तेरे ऊपर औजार।

कहते तुझको माँ, लेकिन नहीं करते प्यार।

तेरे ही गोद से निकले तुझमे ही होंगे खत्म।

फिर भी इनका मन न माने रहते बिलकुल बेशरम।

क्यूँ करती है इतना ? जब न सोचे तेरे बारे में।

लड़ते भी खुद में,सिर्फ तुझे मिटाने के लिए ।

तुझे देखकर मुझे है, तरस आता।

क्यूँ प्रकृति ने ये कार्य बनाया,जब इन्हें कुछ न भाता।

इनका लालच ऐसा, जोकि करता हमें बर्बाद।

तू नीचे रो रही मुझे भी लगा प्रदूषण का श्राप।

क्या कर सकते है हम ? इस स्थिति में।

जब तक कर्म है अपना, निभाएंगे हर पहर में।

तुम आयो या ना आयो इनके पास है उपाय ।

कुछ वर्ष बाद शायद तुम्हारी निर्भरता खत्म हो जाए

तुम अपना कर्म निभाते रहो, मैं अपना निभाऊंगी।

जब अंत आएगा इनका उसके बाद भी रह जाऊंगी।

नयी पीढ़ी के लिए फिर जरुरत बन जाऊंगी।

तब तुम अपनी निर्भरता इनको अच्छे से बताना।

हो पिता समान इसका ज्ञान जरुर दिलाना।

आएगा वो समय जब पानी होगा सिर के पार।

उसके बाद खुलेंगे जीवन के नए द्वार।

नयी उमंग एवं तरंग से होगा तेरा सत्कार।

लेकिन तब तक तुम बस करो इंतजार।

अभिव्यक्तियाँ

पुराने शहर- एक योजनाकार का दृष्टिकोण

कई शहरी इलाके हैं जो लंबे समय से मौजूद हैं। शहरीकरण की प्रक्रिया के दौरान कुछ शहरी इलाके खो भी गये हैं। कई पुराने शहरों के स्थानिक सह–विषयगत अन्वेषण के लिए व्यापक शोध कार्य किया गया है। और विषयगत विकास योजना के दिशा–निर्देश भी हैं। हालांकि, विकास योजना के दिशा–निर्देशों को निर्धारित करने के लिए अन्वेषण को सह–संबद्ध करने का प्रयास अभी भी एक क्षेत्र पर कम काम किया है। न्यूनतम स्थानिक परिवर्तन, खराब परिस्थितियों, खराब प्रबंधित आधारिक संरचना और अंत में खराब रहने की स्थिति की गुणवत्ता और पर्यावरणीय भेद्यताय पुराने शहर संरचना को चर्चा का विषय बनाती है और यह चर्चा नियोजन इतिहास की जवाबदेही की जांच की मांग करते हैं।

मुख्य पुराने शहरों को बेहतर विकास योजना के दिशा–निर्देशों की आवश्यकता होती है, जिसे अतीत से प्रेरणा मिलनी चाहिए। इस तरह से उनकी विरासत और बुनियादी प्रकृति को बहाल किया जा सकता है। हम योजनाकार, ऐसी परिस्थितियों की एक सूची प्रस्तुत कर सकते हैं जो कि परिवर्तन गतिशीलता के भौतिक विशेषताओं पर ध्यान देने के साथ – पुराने शहरों के विकास, अस्तित्व या अधःपतन के कारणों का परीक्षण करने के लिए उपयोग किए जा सकते हैं। विस्तृत मापदंडों के भीतर, ऐसे अच्छे संकेतक भी हो सकते हैं। जो ठोस या कठिन मापदंडों (जैसे बुनियादी ढांचे) और अमूर्त या नरम मापदंडों (जैसे धार्मिक सभा) के बीच संबंध निर्धारित करते हैं। विकसित लक्षणों को विषयगत विकास योजनाओं की अवधारणा के तहत दिशा निर्देशों को निर्दिष्ट करने के लिए उपयोग किया जा सकता है।

इस प्रक्रिया के माध्यम से, अनिवार्य रहने की योग्यता प्रदान करते हुए मुख्य पुराने शहरों के घनीभूत भौतिक रूप को बहाल करने के तरीकों का निर्धारण किया जाएगा। भारत में शहरी नियोजन प्रक्रिया अभी भी विकास योजनाओं के दिशा निर्देश तैयार करने के लिए जनसांख्यिकी और बुनियादी ढांचे पर प्राथमिकता देती है। अंत में यह निष्कर्ष है कि, एक योजनाकार के रूप में, हमें भारत में शहरी नियोजन की नई पीढ़ी के व्यापक पहलू में वैकल्पिक शहरी योजना की पेशकश पर ध्यान देना चाहिए।

गौरबदास महापात्रा

पूर्व छात्र, एम.यू.आर.पी.

विरासत संरक्षण

विरासत संरक्षण आज सम्पूर्ण विश्व में अति महत्वपूर्ण विषय है। भूतपूर्व हमारे पूर्वजों द्वारा किये गये महान कार्य एवं कार्य शैलियाँ, जिन्हें हमने वर्तमान में प्राप्त किया जिसके साथ हमारी सभ्यता, संस्कृति इत्यादि जुड़ी है, यह सब कुछ हमें विरासत के रूप में प्राप्त हुआ है। हमारी भावी पीढ़ियों के लिए विरासत को संरक्षण प्रदान करना और इसे बचाये रखना ही विरासत संरक्षण है। विरासत संरक्षण इतना महत्वपूर्ण है, क्योंकि भूत से हमारा वर्तमान अग्रसर और भविष्य निर्धारित होता है। विरासत हमारा अस्तित्व एवं पहचान है, अभिमान है और इसे बचाये रखने के लिए विरासत संरक्षण अति आवश्यक है।

'परम्परा का वर्तमान से संवाद ही संस्कृतियों को जीवित रखता है।'

विरासत संरक्षण एक ऐसे खजाने को संरक्षित करने जैसा है, जिसकी आभा से आने वाली पीढ़ियों को ज्ञान की रोशनी मिलती रहेगी। हमारी विरासत को संभालकर अगली पीढ़ी को सौंपना हमारी ही जिम्मेदारी है। उनके पास कोई विरासत नहीं होती जो इसका खंडन करते हैं। हम यह प्रतिष्ठा अपने साथ लेकर नहीं, बल्कि अपने पीछे छोड़कर जायेंगे। हमारा देश भारत है और हमारे देश की पहचान ही विरासत की विविधता है। गौरवशाली इतिहास होने के साथ–साथ, यहाँ कि विरासत में वो अद्‌भुत चमक है, जिसको जानने की इच्छा हमेशा से बाहरी व्यक्तियों को लालायित करती रही है।

'हमारे राष्ट्र में मूर्त एवं अमूर्त के रूप में एक विशाल खजाना है, वो है हमारी विरासत।

यहाँ भारतीय वास्तुकला, चित्रकला, मूर्तिकला, नृत्य, संगीत, कठपुतलीकला तथा युगों के माध्यम से भारतीय साहित्य तक में विभिन्न प्रकार की विविधतायें हैं। ये सभी अपने विशेष लक्षणों एवं गुणों के कारण जाने एवं पहचाने जाते है। इसी विरासत को संरक्षित करके एक विरासत पूर्ण देश का निर्माण करना है और इसमें प्रत्येक मनुष्य को सहयोग करना चाहिए। हमारी विरासत कितनी महान हैं, इसका अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है, कि हमारी विरासत को बचाने के लिए कानूनी प्रावधान 1810 में प्रथम बार लागू हुआ। सर्वप्रथम संरक्षणकर्ताओं में से एक जे. मार्शल, जिन्होंने संरक्षण के सिद्धांत प्रतिपादित किये जिनकी वजह से कुछ अब विश्व विरासत सूची में भी शामिल है।

यहाँ तक की स्वतंत्रता से पहले भारतीय सर्वेक्षण काफी विशेषज्ञता हासिल कर चुके थे। इसी कारण अन्य देशों ने भी संरक्षण कार्य हेतु आमन्त्रित किया। उदाहरण के तौर पर अफगानिस्तान में बनियान और कंबोडया का अंकोरवाट सर्वोत्तम है। भारतीय महत्व के प्राचीन स्मारक, स्थल एवं अवशेषों को संरक्षित करने के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने सम्पूर्ण देश को 24 मण्डलों में वर्गीकृत किया है। यह विभाग की विभिन्न परियोजनाओं के अन्तर्गत राष्ट्र की सम्पदा को मूर्त रूप से संरक्षित करने का कार्य कर रहे हैं।

इसके अलावा कई संस्थायें विरासत संरक्षण के कार्य से जुड़ी हुई है तथा विरासत को उनके औचित्य के अनुसार सुरक्षित करने के अथक प्रयास में जुड़े हुये हैं। विरासत संरक्षण में सबसे बड़ी चुनौती संरक्षण के आवश्यक उपायों की योजना बनाना है। जिससे अपनी सभ्यता के अनूठे प्रतीकों को यथासम्भव कम से कम हस्तक्षेप करके उनकी प्रमाणिकता एवं अखण्डता को सहस्त्र वर्षों तक स्थायी रूप से सुरक्षित किया जा सके।

इसके लिए वैज्ञानिक अनुसंधान, संघटक सामग्री, वास्तुशिल्प विशेषज्ञ, उत्पादन तकनीकें, क्षरण की स्थिति आदि सभी विरासत संरक्षण में सहायक है। इसीलिए समय–समय पर सेमिनार, जागरूक अभियान आदि चलाये जा रहे हैं, ताकि आमलोग भी विरासत संरक्षण की महत्वता को जान सके और विरासत को संरक्षित करने में अपना योगदान दे सकें। विरासत संरक्षण का कार्य अस्तित्व को बचाये रखने जैसा है, इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति को 'हमारी विरासत' का सम्मान करना चाहिए। ''राष्ट्र की विरासत'' – उत्साह वर्धक, सांस्कृतिक विचार एवं विकास के प्रतीक है। इससे धर्म, आस्था को बनाये रखने में योगदान होता है। पर इसके संरक्षण में हर आस्था का सम्मान हमें हमारा संविधान सिखाता है।'' कवि सागर ने क्या खूब लिखा हैः

जो खुला था तब वह भंडार था। जो बंद है वह अब है तहखाना।
जब ग़ालिब थे तब महफिल था। अब महफिल मतलब मयखाना।
कुछ शायरी थीं कुछ गजलें थीं। अब संगीत का मतलब है गाना।
सब बदल गया इक झोंके में । कोई विरासत को न पहचाना।

डॉ. विशाखा कवाठेकर
सहायक प्राध्यापक, (वास्तुकला) एवं
चन्द्र प्रभा, (संरक्षण, द्वितीय वर्ष)

पहल

सूत्रधारः आइये आपको ले चलते हैं चाय की दुकान पर, जहां सुबह–सुबह चाय के साथ, अखबार की गर्म–गर्म खबरों के साथ चटपटी गप–शप होती रहती है। कभी–कभी तो राजनीति का अखाड़ा बन जाती है ये दुकान, लगता है संसद का सत्र भी यहीं शुरू हो जाता है।

खैर मिलाते हैं यहां पर आने वाले पात्रों से ....

मिलिये हमारे वकील साहब से .....बाबू जी, अदालत से ज्यादा जिरह तो यहां दुकानों पर करते हैं काश यही जौहर कचहरी में दिखाते तो शायद .....

अजी छोड़िये ..... मिलिये हमारे टीचर साहब से, इन्हें लगता है सारा ज्ञान का खज़ाना इन्हीं के पास है, बोल बच्चन तो इतना कि सारे बच्चे क्लास में रूई लगाकर इन्हें झेलते हैं और सबसे खास हैं हमारे तिवारी जी, कोई काम धाम है नहीं घर पर, फिर भी किसी से कम नहीं है साहब। बतौलेबाजी के उस्ताद है ये .....

अरे बस–बस.... सूत्रधार ही सब बता देगा तो नाटक का क्या होगा साहब। तो आइये मिलिये इन सबसे सुबह 9:00 बजे चाय की दुकान पर .....

चाय वाला – आइये आइये तिवारी जी ..... कैसे हैं ? बड़ी देर लगा दी आज़।

तिवारी जी – (जम्हाई लेते हुए) क्या बतायें भइया रात भर टीवी पर वो 'डिसकसनवा' न देख रहे थे, पालिटिक्स वाला, बड़ा न इंटरेस्टिंग था, अंखिये नहीं खुला। और बताइये वकील साहब क्या पढ़ रहे हैं। अखबार में कुछ नया है क्या ..... अरे बताईयेगा कि विज्ञापन ही निहारते रहियेगा।

वकील साहब– अरे का बात करते है तिवारी जी हम तो खबर ही पढ़ रहे हैं, कहीं कुछो नया नहीं अखबरवा में, वही सब मार–पीट, लड़ाई–झगड़ा। अरे ई देखिये साहब एक अधिकारी लापरवाही के कारण निलंबित हो गया। बताईये साहब, इस देश का तो कुछो नहीं हो सकता।

तभी ..... वकील साहब का फोन आता है ....

वकील साहब ... हां बताईये गुप्ता जी ... कैसे याद किया। क्या आपका लड़का पकड़ा गया ... मारपीट के इल्जाम में, कोई बात नहीं छूट जायेगा, कुछ एडजस्ट करते हैं.....ठीक है कल मिलते हैं....

टीचर : देखो तो, अभी तो बड़ी–बड़ी बातें कर रहे थे पर अब खुद अन्याय का साथ दे रहे हैं। कहते कुछ हैं, करते कुछ हैं।

तिवारी जीः बहुत सही बात कर रहीं है आप । आजकल का तो जमाना ही खराब है। बड़े तो बड़े, बच्चे भी बिगड़ गये हैं। अब यही देखिये समाचार में मनचलों की करतूत। बच्चों में तो आज कल संस्कार ही नहीं रह गये हैं। क्या होगा समाज का .....

टीचरः बहुत सही तिवारी जी.... आज कल बच्चे तो संस्कार ही भूल गये हैं। मैं भी एक टीचर हूं पर क्या करूं स्कूल में तो पढ़ाई ही करा सकती हूं। संस्कार तो बच्चे अपने घर पर मां–बाप से ही सीखते हैं। जैसा मां–बाप करेंगे। बच्चे वहीं तो सीखेंगे।

तभी टीचर का बच्चा आता है ....

बच्चा : (रोते हुए) माँ – माँ क्लास में मुझे एक बच्चे ने पीटा।

टीचरः तो पिट के क्यूं आया, लगाया क्यूं नहीं दो चार हाथ।

तिवारी जीः (अखबार पढ़ते हुए) अजी क्या हो गया है आज देश को। इसका कुछ नहीं हो सकता।

सूत्रधारः माफ कीजियेगा। आप लोग जो यह चर्चा कर रहे हैं। देश समाज सरकार को कोस रहे हैं। मैं तिवारी जी आपसे यह पूछ सकता हूं कि कल चुनाव था। क्या आपने अपना वोट दिया?

तिवारी जीः अरे यार कोई वोट देने जाता है क्या? छुट्टी का दिन था। पूरे दिन घर पर सबने आराम किया। हमारे वोट डालने से क्या सरकार बदल जायेगी।

सूत्रधार : तो तिवारी जी आपके यहां बतियाने से भी समस्या हल नहीं हो जायेगी। अरे गणतंत्र ने आपको मत का अधिकार दिया है। और कुछ नहीं कर सकते है कम से कम वोट ही डाल आते। ये मत भूलिये गणतंत्र ने हमें अगर अधिकार दिये हैं तो कुछ कर्तव्य भी हमें बतायें है। पर सभी कर्तव्यों को भूल अधिकारों की बात करते हैं।

अरे मौलिक कर्तव्यों की तो छोड़े ये वकील साहब अपना कर्तव्य भूल कर अपराधियों की पैरवी कर रहे हैं।

टीचर अपने शिक्षा व संस्कारों को देने के कर्तव्य से पीछे हट रही है। आप अपने मत देने के कर्तव्य से पीछे हट रहे हैं। अगर देश को बदलना है तो खुद को बदलें। देश खुद ब खुद बदल जायेगा।

आइये इस पहल के साथ हम यह प्रण लें .... कि पहले खुद को बदलें

जय हिंद ।

आनंद किशोर सिंह

अनुभाग अधिकारी

डिलीवरी ब्वाय

मुम्बई शहर में दो दोस्त एक साथ रहते थे। एक दिन उनमें से एक ने होटल फोन करके खाना आर्डर किया और होटल वाले से कहा कि कितनी देर में खाना भेजोगे तो होटल मालिक ने कहा साहब बस आधा घंटे में भिजवाता हूँ, उसने कहा ठीक है आधे घंटे में ही भिजवा देना और फोन रखते हुए बड़बड़ाने लगा कि ये होटल वाले लोग कभी भी समय से खाना नहीं भिजवाते हैं आज आने दो इसको लेट फिर इसको बताता हूँ एक मिनट भी अगर लेट हुआ तो खाना वापस भेजूंगा और उसको दस बातें सुनाऊँगा।

इतना बड़बड़ाने के बाद उसकी नजर अपने दोस्त पर पड़ी वह बहुत ही विचाराधीन मुद्रा में बैठा सोच रहा था तभी इसने कहा चल यार तू अपने कपड़े बदल ले तब तक खाना आ जायेगा परन्तु विचाराधीन मुद्रा में बैठे हुए उसके दोस्त पर कोई असर न होते देख उसने पूंछा.. कुछ बोलता क्यूं नहीं.. तब उसके दोस्त ने कहा अभी मै बाहर से आ रहा था तो मुझे एक डिलीवरी ब्वाय मिला। वह मुझसे पता पूछ रहा था, मैने उसका पता पढ़ते हुए उससे बोला यही सामने वाली बिल्डिंग में तो है, तो वो बोला साहब यहाँ मकान नं. और पता मराठी और अँग्रेजी में लिखा है परन्तु मराठी तो ठीक है हिन्दी से मिलती जुलती है, अंदाजा लगा लेता हूँ, परन्तु अँग्रजी नहीं आती साहब इसीलिए पिछले एक घंटे से प्रतीक्षा कर रहा हूँ कि कोई आये तो मैं पता पूछू। चूँकि आज बारिश हो रही है और रात भी है शायद इसीलिए इतनी देर प्रतीक्षा के बाद आप दिखे साहब, तब साहब ने उससे बोला कि तुम पिछले एक घंटे से यही बारिश में खड़े–खड़े भीग रहे हो, जी साहब, तब साहब ने कहा कि तुम्हें पता नहीं समझ में आ रहा था तो ग्राहक को फोन करते या होटल वापस लौट जाते। एक घंटा हो गया हो सकता है वह ग्राहक अब तुम्हारा आर्डर न ले, डिलीवरी ब्वाय बोला साहब मैं अभी नौकरी में नया हूँ न इसलिए मालिक ने मुझे फोन नहीं दिया, बोला जब तुम्हें महीना हो जायेगा तब फोन मिलेगा, और साहब मैं वापस होटल नहीं जा सकता था क्योंकि मालिक मुझे मारकर नौकरी से निकाल देगा, अभी मुझे पाँच ही दिन हुए है गाँव में मेरे बापू जी, माई और तीन छोटे भाई बहन हैं, न जाने कैसे गुजारा करते होंगे। सोचता हूँ कि मुझे बाइस सौ रूपये मिलेंगे तो मैं दो सौ रूपये में खर्चा करके दो हजार गाँव भेज दूँगा ताकि मेरे छोटे भाई बहन और माई, बापू को दो वक्त की रोटी मिल सके इसलिए साहब मैं बिना डिलीवरी दिये वापस नहीं जा सकता था, डिलीवरी ब्वाय की समस्या सुनकर साहब को बड़ी दया आयी। उन्होंने उससे कहा अच्छा तुम अपने बापू जी से फोन पर बात करोगे उसने कहा नहीं साहब बापू जी के पास फोन नहीं है और रात भी बहुत हो गई है, अब वो सुत गये होंगे और इस तरह वह साहब अपने घर वापस आकर विचार कर रहे थे तभी उनका दोस्त होटल में फोन करके आर्डर कर रहा था। अपने दोस्त को यह कहानी बता ही रहा था कि तभी डोर बेल बजी और उनका पार्सल आया, जो सोच रहे थे कि इतनी बाते सुनाऊँगा अगर लेट हुआ, परन्तु अपने दोस्त से डिलीवरी ब्वाय की कहानी सुनने के बाद उसने डिलीवरी ब्वाय को तौलिया देकर कहा.. तुम भीग गए हो.. सर पोंछ लो.. जबकि डिलीवरी ब्वाय आधा घंटा लेट था।

अशोक मिश्रा

पुस्तकालय सहायक

स्पन्दन
वार्षिक राजभाषा पत्रिका
अंक 3, सितम्बर 2017

राजभाषा समिति

अध्यक्ष
प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन

सदस्य
राजेश मौज़ा, कुलसचिव
डॉ. बिनायक चौधुरी, प्राध्यापक
डॉ क्षमा पुणताम्बेकर, सहायक प्राध्यापक
श्री गौरव सिंह, सहायक प्राध्यापक
श्री सन्मार्ग मित्रा, सहायक प्राध्यापक
श्री शाजू वर्गीज़, उपकुलसचिव
श्री राजेन्द्र कुमार जेना, हिन्दी अधिकारी
श्री मनीष विनायक झोकरकर, सहायक कुलसचिव
श्री अमित खरे, सहायक कुलसचिव
श्रीमती दीपाली बागची, सहायक कुलसचिव
श्री आनंद किशोर सिंह, अनुभाग अधिकारी
श्री सुनील कुमार जायसवाल, हिन्दी सहायक
प्रतिनिधि, छात्र परिषद

सम्पादक मण्डल
अश्फाक आलम, प्रधान सम्पादक
आशिष पाटिल, सम्पादक
राजेन्द्र कुमार जेना, सम्पादक
अमित खरे, सम्पादक

सहयोग
प्रतिभा सिंह, बहुप्रवीणता सहायक
कुश श्रीवास्तव, लेखापाल
सुनील कुमार जायसवाल

मुख्य एवं अंतिम पृष्ठ अंकन
आशिष पाटिल, सहायक प्राध्यापक

स्पन्दन

वार्षिक राजभाषा पत्रिका

अंक 3, सितम्बर 2017

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय भोपाल, मध्य भारत के झीलों के शहर भोपाल में स्थित है। संस्थान के प्रतीक चिन्ह की पृष्ठभूमि में मालवा वास्तुकला का अर्थ समाहित है, जो कि मालवा सल्तनत की राजधानी मांडू में स्थित नीलकंठ महादेव मंदिर के सामने 'महादेव' के प्रतीक एक शंखनुमा घुमावदार जलवाहिका है। भक्तजन पुष्प को पूर्ण आस्था के साथ अपनी इच्छापूर्ति हेतु इसमें अर्पित करते हैं। जलवाहिका में प्रवाहित जल, पुष्परूपी इच्छा के साथ जीवन के संघर्ष एवं ध्येय की सफलता का संकेत देता है। जो कि वास्तुकला का अभिन्न अंग एवं School of Planning and Architecture, स्वरूप का प्रतीक है। संस्थान के प्रतीक चिन्ह में शंखाकार रूप में दर्शित 'S' अग्नि 'P' वायु तरंग एवं 'A' पानी की बूंद प्रदर्शित करती है प्रतीक चिन्ह के नीचे संस्कृत में लिखा श्लोक 'स्थपति' स्थापनार्ह: स्यात् सर्वशास्त्रविषारद:' श्समरांन्गना सूत्रधार से उद्धृत है जिसका अर्थ है कि वास्तुकार को वास्तुकला के साथ सभी विषयों का ज्ञाता होना चाहिए, प्रतीक चिन्ह का उद्देश्य छात्रों को वास्तुकला के साथ-साथ सर्व विषयों में पारंगत कर भविष्य में एक नये आयाम के लिए तैयार करना है।

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल

(राष्ट्रीय महत्व का संस्थान, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)

नीलबड़ रोड, भौंरी भोपाल (म.प्र.) - 462 030 (भारत)

Website: www.spabhopal.ac.in